जिला मानव विकास प्रतिवेदन

जिला - सवाई माधोपुर

(योजना आयोग, यू.एन.डी.पी. एवं राजस्थान सरकार की संयुक्त परियोजना
'स्ट्रेंथनिंग स्टेट प्लान्स फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट' के अन्तर्गत निर्मित)

मार्च 2010

जिला कलेक्टर कार्यालय
सवाई माधोपुर

तालिका संख्या-3.11

कस्तूरबा गाँधी विद्यालयों में कक्षावार नामांकन (वर्ष 2009 के अनुसार)

क्र.सं.	कक्षा स्तर	बालिकाओं की संख्या
1.	VI	166
2.	VII	159
3.	*VIII*	*168*
	कुल	493

स्रोत : सर्व शिक्षा अभियान, सवाई माधोपुर।

3.4.7 मदरसा शिक्षा

जिले में मुस्लिम समुदाय के बच्चे दीनी तालीम प्राप्त करने के लिए मदरसों में जाते हैं। राज्य सरकार द्धारा इन मदरसों को औपचारिक शिक्षा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है जिसके अन्तर्गत इन मदरसों में शिक्षा सहयोगी की नियुक्ति कर, मदरसों में अध्ययन करने वाले बच्चों को दीनी तालीम के साथ-साथ सामान्य विषयों का भी अध्ययन कराया जाता है। राजस्थान मदरसा शिक्षा बोर्ड इस कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। सवाई माधोपुर जिले में 162 मदरसों में यह कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है जिसमें प्राथमिक स्तर पर 9634 लड़के एवं 3279 लड़कियाँ तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर 328 लड़के एवं 110 लड़कियाँ अध्ययनरत हैं। इन आँकडों से स्पष्ट है कि मुस्लिम समुदाय की बालिकाओं को शिक्षा से जोड़े जाने की आवश्यकता है। औपचारिक शिक्षा लागू करने के पश्चात मदरसों में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है तथा मुस्लिम समुदाय के बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ पाए हैं।

बॉक्स-3.1

सामुदायिक पाठशाला 'उदय'

सवाई माधोपुर के रणथम्भौर के आस-पास तथा आन्तरिक क्षेत्रों में स्थित गांवों में स्तरहीन शिक्षा से चिन्तित अभिभावकों ने शिक्षा के कमजोर स्तर तथा इसके कारण बच्चों में शिक्षा के प्रति अरूचि होने के कारण बढ़ती निरक्षरता को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का गठन किया। इस विचार को मूर्त रूप देने हेतु नवाचारात्मक एवं शिक्षा के अनुभवी मनीष पाण्डेय को इसका सचिव बनाया गया।

सचिव मनीष पाण्डेय ने वर्ष 2003 में इन गांवों तथा स्कूलों में जाकर व सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाकर स्थिति का जायज़ा लिया। इन इलाकों की शिक्षा की स्थिति सचमुच दयनीय थी। सचिव ने इस दशा का ब्यौरा देते हुए अभिभावकों से नई शिक्षा व्यवस्था की बातचीत की, कि यह शिक्षा बच्चों को आजादी देगी तथा शिक्षा बच्चे के लिए बोझ अथवा अरूचिकर बनने के बजाय आनन्ददायी शिक्षा होगी। यह शिक्षा व्यवस्था अभिभावकों को अच्छी लगी और इसी बातचीत में गांव वालों ने पहल करते हुए स्कूल हेतु खवा (रांवल) में 8 बीघा जमीन ग्रामीण शिक्षा केन्द्र को दान कर दी। इस प्रकार मस्ती की पाठशाला की शुरूआत हो गयी। इसकी सफलता को देखते हुए बोदल व फरिया गांव के लोगों ने भी स्कूल शुरू करने की मांग की तथा बोदल ने 5 बीघा जमीन भवन सहित स्कूल संचालन हेतु दी एवं फरिया ने 10 बीघा

जमीन स्कूल के संचालन हेतु दान दी।

इस स्कूल की दैनिक शुरूआत आनन्ददायी गीतों तथा नृत्य, नाटक से होती है। उदय में बच्चों की एक स्कूल पंचायत भी होती है जिसको कि बच्चों द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली से चुना जाता है। यह पंचायत स्कूल प्रबन्धन तथा समस्याओं के समाधान में अपनी जिम्मेदारी दिखाती है। पंचायत ही सम्पादक व पत्रकारों का चयन कर आस-पास के समाचारों व विचारों को समाहित कर उदय पत्रिका का संचालन करती है। उदय में लकड़ी का काम, मुर्गीपालन, नाटक तथा खेल को अन्य विषय की तरह ही पर्याप्त समय दिया जाता है। बच्चों की क्षमताओं, इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है ताकि शिक्षा बच्चों को अरूचिकर न लगे। उदय में बच्चों के लिए आत्मविश्वास तथा रचनात्मकता बढ़ाने हेतु प्रयास किया जाता है, जैसे - परीक्षा का न होना, विषयवस्तु को समझने पर जोर देना आदि। शैक्षणिक गतिविधियों में समुदाय को भी शामिल किया जाता है, जैसे - सरपंच से वार्तालाप, किसान से वार्तालाप। इन सब गतिविधियों के कारण कई बार समुदाय को संशय भी हुआ कि क्या खेल ही खेल होता है या पढ़ाई भी, लेकिन उदय की लगातार समुदाय से जुड़े रहने की प्रवृत्ति से वे सभी विषयों की समझ के प्रति निश्चिन्त हो चुके थे। वर्तमान में 4 उदय शालाएँ संचालित हैं जिनमें 483 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। स्वयं सीखने की मान्य शिक्षा-प्रणाली से कक्षा 8 प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर भी यह साबित कर दिया कि कोई भी हमसे दूर नहीं है।

उदय में 4 साल के बच्चे भी 3 किलोमीटर दूर से खुशी से उछलते हुए स्कूल चले आते हैं। समुदाय भी अपनी भागीदारी लगातार बढ़ाता जा रहा है जिसमें चाहे भवन निर्माण हो अथवा बच्चों के आनन्ददायी कार्यक्रम ''किल्लोल'' में खाने की व्यवस्था हो।

3.5 शिक्षकों की स्थिति

3.5.1 शिक्षकों की संख्या

जिले में सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संख्या तालिका संख्या-3.12 में देखी जा सकती है। साथ ही वर्ष 1998-99 से 2008-09 की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

तालिका संख्या-3.12

जिले में शिक्षकों की संख्या

क्र. सं.	विद्यालय	1998-99		2008-09	
		सरकारी	निजी	सरकारी	निजी
1.	प्राथमिक	1375	298	1796	819
2.	उच्च प्राथमिक	1413	1316	2240	2140
3.	माध्यमिक	706	276	752	1592
4.	उच्च माध्यमिक	606	134	710	892
	योग	4100	2024	5498	5443

स्रोत : प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग, सवाई माधोपुर।